- डॉ. बेंद्रे बसवेश्वर नागोराव

धार्मिक समरसता की मांग करते उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यास

सार – धार्मिक समरसता समानता की पैरवी करता है, यह समाज में व्याप्त असमानता का विरोध कर समानता को स्थापित करना चाहता है । इस कार्य में सहायक सभी रचनाकार धार्मिक समरसता की मांग करनेवाले साहित्यकार कहलाते हैं । इनमें उपेन्द्रनाथ अश्क अग्रणीय हैं । विशेषतः वे अपने उपन्यासों में धार्मिक समानता की बात करते हुए तत्कालीन सत्य को उजागर करने का प्रयास किया । गिरती दीवारें उपन्यास में अश्क जी ने धर्म के पूंजीवादी रूप से परिचय करवाते हुए यह कहा कि धर्म के नाम पर हो रहे आर्थिक शोषण से ज्यादा घटक समाज में बढ़ती दूरियाँ है । दो धर्मों के बीच शादी ब्याह किस प्रकार हिंसक रूप लेता है, इसका यथार्थ वर्णन शहर में घुमाता आईना उपन्यास के माध्यम से देखने को मिलता है । इसी मानसिकता को बदलने की मांग अश्क जी करते हैं । एक नन्हीं कंदील उपन्यास में किस प्रकार अपने धर्म को उच्चतर समझाते हुए, धर्म के नाम पर सांप्रदायिक दंगे करवाएं जाते हैं इसको उद्धृत किया । लेखक सांप्रदायिक संघर्षों का मूल कारण में धर्म को ही मानते हैं । गर्म राख उपन्यास में धर्म संप्रदाय की भावना से ऊपर उठने की मांग करते हुए, विश्व समरसता की बात करते हैं । लेखक एक ऐसा विश्व चाहते हैं, जिसमें सभी देश, धर्म एवं समाज अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुए भी एक दूसरें के पूरक हो ।

बीजशब्द – समरसता, मानवीय मूल्य, युगबोध, मूल्य–चेतना, प्रांसगिकता

प्रास्ताविक – समरसता का सामान्य अर्थ होता है–सभी को अपने समान समझना । सभी मनुष्य एक ही है, एक ही शक्ति से संचलित, उनमें एक ही चैतन्य विद्यमान है, इस भाव को मानना ही समरसता है । धार्मिक समरसता इससे अलग नहीं है । धार्मिक भेदभाव को न मानते हुए, सभी धर्मों को समान मानना ही धार्मिक समरसता कहलाता है । साहित्य में समाज प्रतिबिंबित होता है । समाज में व्याप्त अच्छे और बुरे तत्त्व भी साहित्य में परिलक्षित होते है । सामान्यतः यह कार्य लेखक या साहित्यकार अपने साहित्य में व्यक्त विचारों के माध्यम से करता है । हिंदी में धार्मिक समरसता की एक लंबी परंपरा मौजूद है । हिंदी साहित्य के आदिकाल में सरहपा से लेकर, भक्तिकाल के कबीर और आधुनिक काल के अनेकों लेखकों ने समाज में

व्याप्त धार्मिक भेदभाव को देखते हुए, धार्मिक समरसता की मांग की । इन लेखकों में उपेन्द्रनाथ अश्क भी एक महत्त्वपूर्ण नाम है । हिंदी और उर्दू के प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में उपेन्द्रनाथ अश्क अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । साहित्य के अनेक विधाओं में लेखन के बावजूद वे उपन्यासकार के रूप ज्यादा प्रभावी रहे हैं । उनके साहित्य का रचनात्मक विकास राष्ट्रीय आन्दोलन के दौर में हुआ । इसी समय में घटित जलियांवाला बाग़ जैसी घटनाओं का उनके जीवन और साहित्य पर गहरा असर पड़ा है । इनके लेखन की शुरुआत भले ही पहले हुई हो, लेकिन प्रगतिशील आन्दोलन के दौर में ही उन्होंने हिंदी साहित्य जगत में अपना सशक्त हस्तक्षेप दर्ज किया । प्रगतिशील आन्दोलन से प्रभावित होने पर भी वे किसी एक आन्दोलन में बंधकर नहीं रहे । उनके साहित्य में पायी जानेवाली परिवर्तनवादी मूल्य–चेतना इसी आन्दोलन की देन है । उनके उपन्यासों में मनुष्य स्वभाव के प्रश्नों, जीवन की विडम्बनाओं और मध्यवर्गीय जीवन की गुत्थियों का चित्रण किया गया है ।

विषय प्रवेश –

अश्क अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज के अनेक घटकों पर प्रकाश डालते हैं । उपन्यासों में उन्होंने समाज को आधुनिक युगबोध से जोड़ने और रूढ़ियों को अस्वीकार करने का आव्हान किया है । अश्क का संबंध मध्यवर्ग से रहा है, इसीलिए मध्यवर्ग को विशेष रूप से चित्रित करने का प्रयास वे करते हैं । उनके उपन्यासों में भारतीय मध्यवर्ग का व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन ही अधिक आभिव्यक्त हुआ है । अश्क ने अपने जीवन में रूढ़ियों, अंधविश्वासों, कुरीतियों को बड़े नजदीक से देखा है, इसी कारण वे अपने साहित्य के केंद्र में धार्मिक एवं सामाजिक विषमता तथा शोषण को रखते हैं, जो उपर्युक्त कारणों से पैदा होते हैं ।

अतः कहा जाता है कि धर्म के द्वारा समाज में नैतिकता, सदभावना, एकता, परोपकारिता जैसे सद्गुणों का निर्माण होता है । आज समाज में धर्म का रूप विकृत हो गया है । धर्म की आड़ में घृणित से घृणित कार्य भी किये जा रहे हैं । धर्म की दुहाई देकर सांप्रदायिक दंगे भी कराये जाते हैं । आज भी अधिकतर लोग अनपढ़ता और संकीर्णता की बेड़ियों से जकडे हुए है । अतः शायद पढ़े–लिखें भी इसमें कम–अधिक मात्रा में मिल ही जायेंगे । भारतीय समाज में धर्म एवं रूढ़ि का इतना अधिक प्रभाव है कि चाहकर भी लोग इस को छोड़ नहीं पाते ।

वास्तव में धर्म मूलतः मनुष्य को नैतिक दृष्टि से ऊँचा उठाता है परन्तु मनुष्य सदा ही अपने निजी स्वार्थ के लिए धर्म का उपयोग करता है । आज प्रत्येक धर्म में विकृतियों का दर्शन पाया जाता है । भारत ही नहीं विश्व के विभिन्न भागों में आज धार्मिक कट्टरता की लहर चल रही है । धर्मान्धता के प्रभाव में आज निरीह लोगों का रक्त बहाया जा रहा है । प्रत्येक धर्म के ठेकेदार अपने लिए हर प्रकार की सुख सुविधाएँ बटोरने में लगे हैं । अतः धर्म आज शोषण के शस्त्र के रूप में स्वार्थी लोगों द्वारा प्रयुक्त किया जा रहा है । भारत में हमेशा से सांप्रदायिक संघर्षों का मूल कारण धर्म ही रहा है । संकीर्ण धार्मिक दृष्टिकोण के कारण ही विश्व में संघर्ष दिखाई पड़ रहा है । अतः उपर उल्लेखित सभी स्थितियों का चित्रण उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यासों में देखा जा सकता है । अश्क ने अपने उपन्यासों में धर्म की आड़ में हो रहे शोषण का यथार्थ चित्रण किया है । 'गर्म राख़', 'गिरती दीवारें', 'एक नन्ही किंदील', 'शहर में घूमता आईना' आदि उपन्यासों में इसको देखा जा सकता है ।

गिरती दीवारें –

'गिरती दीवारें' उपन्यास में उपन्यास का नायक चेतन सोचता है कि "यह धर्म क्या पूंजी ही का दूसरा रूप नहीं ? चेतन ने सोचा, पूंजी ही की तरह हजारों गरीबों के खून–पसीने की कमाई पर फल–फूल कर मोटा वही हो रहा क्या ?"[1] भले इस वाक्य में धार्मिक चिंतन से ज्यादा प्रगतिशील चिंतन का प्रभाव ज्यादा दिखाई दे रहा हो लेकिन इस में जो प्रश्न उठायें गए हैं वे बड़े मारके के हैं । अश्क अपने उपन्यासों में धर्म के नाम हो रहे आर्थिक लुट का यथार्थ चित्रण करते हैं । धर्म के नाम पर हो रहे आर्थिक शोषण से ज्यादा घातक इससे समाज में बढ़ती दूरियां हैं । जो अपने समाज को अन्धरुनी ढंग से खा रही है । जिस दिन इसका स्पोट होगा उस दिन वह स्पष्ट रूप से दिखाई देगा । अश्क अपने उपन्यास में धर्म एवं जाति के नाम पर हो रहे भेदभाव तथा शोषण का वर्णन करते है । इसके आलावा समाज में व्याप्त विषमता का चित्रण भी अपने उपन्यासों में करते हैं ।

शहर में घुमता आईना –

'शहर में घूमता आईना' उपन्यास में एक विधवा औरत तेलू नाम के एक व्यक्ति से शादी कर लेती है जिससे मोहल्ले में खलबली मच जाती है । इस पर चेतन के पिता पंडित शादीराम सबको समझाते हुए कहते हैं "साले, अच्छा हुआ कि वह तेलू के घर जा बैठी ।' पंडित जी ने पेग कन्ठ में उंडेल कर हाथ से पोंछते हुए कहा , 'मुहल्ले में तो है, अगर वह किसी मुसलमान या क्रिस्तान के साथ निकल जाती तो तुम क्या कर लेते ?"[2] अतः यहाँ पर बताया गया है कि समाज में आज भी दो धर्मों के बीच शादी ब्याह का संबंध मान्य नहीं

है, भले ही वह अपने धर्म के अपने जाति के किसी पागल के साथ ही क्यों न शादी कराये । यदि कहीं ऐसा होता भी है तो उन दोनों विशेष समाज से अनेक कठिनाईयों का सामना उन्हें करना पड़ता है । कहीं बार इस पर हिंसक प्रतिक्रिया भी देखी गयी है । अश्क इस मानसिकता को बदलने की मांग अपने उपन्यासों के माध्यम से करते है ।

एक नन्हीं कंदील –

अश्क के उपन्यासों में साम्प्रदायिकता का भी सजीव चित्रण किया गया है । साम्प्रदायिकता में धर्म के नाम पर एक दूसरे से दंगे फसाद किये जाते हैं । जिसमें एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों से मेल–जोल रखना पसंद नहीं करते । हर व्यक्ति अपने धर्म को उच्चत्तर समझता है । यहाँ तक भी ठीक है, लेकिन जब वहीं व्यक्ति अगर दुसरे धर्म को हेय समझे तो गलत है । और इसी से साम्प्रदायिकता का सवाल पैदा होता है । इसीलिए कहना न होगा कि साम्प्रदायिक संघर्षों का मूल कारण भी धर्म ही रहा है । धर्म के नाम पर ही हिन्दू मुसलमानों को आपस में लड़ाया जाता रहा हैं । अश्क के उपन्यास 'एक नन्ही कंदील' में उपन्यासकार ने सांप्रदायिक दंगों की ओर संकेत करते हैं । इस उपन्यास में एक साइकल सवार युवक एक मुसलमान बूढ़े से टकरा जाता है । युवक चुपचाप उठकर अपनी साइकिल का हैंडल ठीक करने लगता है जो टेढ़ा हो गया था । तभी एक युवक जो शायद बूढ़े का भतीजा था, वह आकर साइकल सवार को एक घूंसा लगा देता है । बस दंगे की शुरुआत हो जाती है । अश्क उपन्यास में लिखते हैं "तभी रतनचंद की सराय और सामने की दुकानों से कुछ हिन्दू लाले साइकिल सवार की मदद को दौड़े और बाँस के टालों से मुसलमान उस युवक की मदद को पहुंचे और हवा में गालियां और घूसें उछलने लगे ।"[3] इस दंगे का कारण बहुत छोटा होता है लेकिन इसके पीछे समुदाय की विकृत मानसिकता की भड़ास होती है जो साम्प्रदायिकता के चलते वर्षों से उनके अन्दर पनप रही होती है । इस को पनपने देना समाज के लिए अत्यंत घातक होता है । इस बात को अश्क अपने उपन्यासों में बताते है । देश में धर्म के दुरूपयोग पर महान विचारक राधाकृष्णन को भी कहना पड़ा । "धर्म के इस दुरूपयोग के कारण हमें बहुत क्षति उठानी पड़ी है, यद्यपि हम उच्च स्वर से घोषित करते है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है, लेकिन ऐसे मतों और ऐसी प्रथाओं के वहन करते आ रहे हैं जो असामाजिक है ।"[4] अतः यहाँ पर समाज में दिखाई देनेवाले दुगलेपण का उल्लेख दिखाई देता है । राजनितिक लोग अक्सर समानता की बात करने के चक्कर में लोगों में अलगाव ही बढ़ाते हुए दिखाई देते है ।

गर्म राख –

अश्क अपने उपन्यास में धर्म, संप्रदाय की भावना से उपर उठने की बात करते हैं । वे महसूस करते हैं कि यदि हमें अपनी उन्नति करनी हो तो हम सब को एकजुट रहना होगा । उपन्यास 'गर्म राख' में हरीश मानवता की भलाई के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहता है "क्यों नहीं सारी दुनिया के लोग मिलकर इस धरती पर ही स्वर्ग बनाने का प्रयास करते हैं ? क्यों इसे नरक बनाये हुए हैं ? पर यह तभी हो सकता है, जब सारी धरती पर एक ही सरकार हो, सारी दुनिया के प्रदेश पर एक संघ के सदस्य हों और एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का, एक जाति दूसरी जाति का, एक समाज दूसरे समाज का और एक देश दूसरे देश का शोषण करने के बदले उसकी सहायता करें ।"[5] अश्क उपन्यास के पात्र हरीश के माध्यम से 'विश्व समरसता' की बात करते हैं, जिसमें सभी देश, धर्म, समाज स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुए भी एक दूसरे के पूरक बनें ।

निष्कर्ष –

यह उपन्यास अपने समाज की विषमताओं तथा धार्मिक द्वेष को उजागर करने में सार्थक सिद्ध हुई है । अश्क के उपन्यासों में जिस साम्प्रदायिकता का वर्णन आता है, वह आज भी समाज में मौजूद है । यह हमारी विडम्बना है । शायद इसीलिए अश्क के उपन्यास आज और ज्यादा प्रासंगिक लगते है । आज इसकी ज्यादा आवश्यकता है । अतः अश्क का उपन्यास साहित्य एक स्वस्थ समाज की कामना करता है जिसमें सभी धर्म, जाति समान और एक हो ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. पृ. 351, गीरती दीवारें – उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहबाद, चतुर्थ सं. 1950
2. पृ. 407, शहर में घूमता आईना – उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहबाद, द्वितीय सं. 1972
3. पृ. 346, एक नन्हीं कंदील – उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहबाद, चतुर्थ सं. 1968
4. पृ. 10, समकालीन कहानी के विविध सन्दर्भ – कीर्ति केसर, नचिकेता प्रकाशन दिल्ली, प्रथम सं. 1985
5. पृ. 266, गर्म राख – उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहबाद द्वितीय सं. 1950

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
डॉ. एन. एस. ए. एम. फर्स्ट ग्रेड कॉलेज, बैंगलोर
मो. नं. - 9490139682 इमेल - bashu.hcu@gmail.com